ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

लघुकृषको का विकास एवंम कल्याण: बच्चों का शिक्षा संदर्भ

प्रा. संजय फुलकर
सहयोगी प्राध्यापक,
कुंभलकर समाजकार्य सांध्यकालीन
महाविद्यालय, राजीव नगर नागपूर

प्रस्तावना:

भारत में, किसानों को भूमि जोत के आधार पर पांच समूहों में वर्गीकृत किया गया है। एक हेक्टेयर से कम जोत क्षेत्र वाले सिमांत किसान, एक से दो हेक्टेयर के बीच जोत क्षेत्र वाले छोटे किसान, दो से चार हेक्टेयर के बीच जोत क्षेत्र वाले अर्ध-मध्यम किसान और दस हेक्टेयर से अधिक जोत क्षेत्र वाले बड़े किसानों के पांच समूह हैं। (कुसुमडे, मारुति सम्राट डिजिटल 28 जुलाई 2020)

1980-81 में 26.2 प्रतिशत कृषि भूमि पर 74.5 प्रतिशत सीमांत और छोटे किसानों और अर्ध-मध्यम, मध्यम पर निर्भर था और बड़े किसानों सहित 25.5 प्रतिशत किसानों के पास 73.8 प्रतिशत जोत क्षेत्र था। 2020-11 में सीमांत और छोटे किसानों की संख्या बढ़कर 85 फीसदी हो गई थी। और उनकी हिस्सेदारी कृषि भूमि के कुल सक्रिय जोत क्षेत्र का 44.6 प्रतिशत थी। यानी शेष 15 फीसदी अर्ध-मध्यम, मध्यम और बड़े किसानों के पास कुल जोत क्षेत्र का 55.4 फीसदी हिस्सा था। यह भारत में होल्डिंग सेक्टर के विभाजन में असमानता को दृढ़ता से प्रकट करता है।

भारत में, लगभग 85 प्रतिशत किसान छोटे और सीमांत किसान हैं, जिनकी कृषि भूमि आकार में बहुत छोटी है, इसलिए उस कृषि भूमि से उत्पादन और आय भी इतनी कम है कि किसान का परिवार उस उत्पादन से अच्छा जीवन यापन नहीं कर सकता है। (घरात, अमित ई-सकल 7 जनवरी 2017)

किसान को पहले अपना पेट और अपने परिवार का पेट भरना होता है और फिर बची हुई उपज बेचनी होती है। इसलिए, कृषि वाले परिवारों को प्रचुर मात्रा में उपलब्धता और इसलिए खुशी माना जाता है। 20-30 साल पहले भी अच्छी कृषि, मध्यम व्यापार और जूनियर जॉब की कहावत का व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता था, तो वास्तव में किसान अब परेशानी में क्यों थे। कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि एक अनाज का सौ अनाज का व्यवसाय है। फिर किसान का घर क्यों नहीं बना। (सारंगपानी, श्रीनिवास म.टा. 9 नवंबर 2020)

सभी आम भारतीय किसानों के पास 2.5 एकड़ से कम भूमि है देश की कृषि योग्य भूमि भी तेजी से 6 प्रतिशत तक घट रही है। किसानों को संतोषजनक आय नहीं मिल सकती। अनियमित बारिश के कारण किसानों का समय चरमरा जाता है। बार-बार पड़ने वाले सूखे और भुजले की घटती मात्रा के कारण सिंचाई या कुएं के पानी पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। खेतिहर मजदूर भी दुर्लभ होते जा रहे हैं। छोटे किसान मशीनरी और

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

कुशल जनशक्ति का खर्च वहन नहीं कर सकते। बीज, कीटनाशकों और उर्वरकों की आपूर्ति के मामले में भी यही स्थिति है। यह अपर्याप्त और असामयिक बिजली आपूर्ति की समस्या है। . (महल्ले, विजय कृषि शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता 8 जुलाई 2017)

जो बच्चे ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ना चाहते हैं, उन्हें कृषि शिक्षा मिलेगी तो निश्चित रूप से लाभ होगा। यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान और जानकारी का उपयोग सफलता के लिए अवश्य किया जाता है। विभिन्न क्षेत्रों जैसे इंजीनियरिंग पशुपालन में शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है। कृषि विज्ञान और कला पर आधारित है। तो कृषि विज्ञान और उसके कौशल के बारे में जानना। किसानों के लिए है जरूरी। यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान और जानकारी का उपयोग सफलता के लिए अवश्य किया जाता है। विभिन्न क्षेत्रों जैसे इंजीनियरिंग पशुपालन में शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है। कृषि विज्ञान और कला पर आधारित है। इसलिए किसानों को कृषि विज्ञान और उसके कौशल के बारे में जानना जरूरी है।

ढाई एकड़ से भी कम कृषि होने के कारण इससे होने वाली आय से अपने बच्चों को शिक्षित करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि उनके बेटे और बेटियां उन कठिनाइयों को सहन न करें जो लघुकृषकों ने जीवन भर झेलीं और वे अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं। नीचे दी गई तालिका से पता चलता है कि हमारे पास कितनी कृषि है और लड़के और लड़कियों को कितनी आसानी से शिक्षा मिलनी चाहिए।

Abstract.:

किसान यह दुनिया का अन्नदाता है। भारत का मुख्य व्यवसाय कृषि है। आज भी 66 प्रतिशत लोग कृषि को अपना मुख्य व्यवसाय मानते हैं। लघुकृषको के विकास, कल्याण, समाज मे प्रतिष्ठा मिलनी चाहिऐ और सरकारी नोकरी मिलनी चाहिये इसलिऐ उनको लगता कि उनके बच्चोने शिक्षा लेनी चाहिऐ। शिक्षासे ही खेतीमे क्रांती हो सकती है। इसलिऐ लघुकृषको के बच्चोने शिक्षा लेनी चाहिऐ।

Keywords.: खेती, मुख्य व्यवसाय, विकास, कल्याण, प्रतिष्ठा, सरकारी नोकरी, शिक्षा से क्रांती

अध्ययन का उद्देश:

1. लघुकृषको के बच्चो ने शिक्षा लेने से लघुकृषको का विकास और कल्याण होता है, इसका अध्ययन करना।
2. लघुकृषको के बच्चो ने शिक्षा लेने से लघुकृषको को समाज मे प्रतिष्ठा मिलती है, इसका अध्ययन करना।
3. खेती मे उत्पादन बढाने के लिऐ लघुकृषको के बच्चो ने शिक्षा लेनी चाहिऐ, इसका विश्लेषण करना।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

अध्ययन की परिकल्पना:

1. लघुकृषको के बच्चो ने शिक्षा लेने से लघुकृषको के बच्चो का सरकारी नोकरी मिलने से उनका आर्थिक विकास होता है।
2. लघुकृषको के बच्चो ने शिक्षा लेने से लघुकृषको को समाज मे प्रतिष्ठा मिलेंगी।
3. लघुकृषको के बच्चो ने शिक्षा लेने से खेती मे उत्पादन बढेंगा और अनकी अर्थिक दुर्बलता कम होगी।

संशोधन पध्दती:

अध्ययन का विश्व एवं क्षेत्र: प्रस्तुत अध्ययन पूर्वी विदर्भ के भंडारा, गोंदिया, गडचिरीली, वर्धा, चंद्रपुर और नागपुर जिले के आर्थिक पिछड़ापन, शैक्षिक पिछड़ापन, कृषि की कम उत्पादकता स्थिति, छोटे किसानों का जैविक खेती पर अधिक निर्भर होना और सहायक उत्पादन का निम्न स्तर, जिले के सभी छोटे किसान आदि बातों पर विचार कर के अध्ययन का विश्व हैं। जिसमें से 292 छोटे किसानों को उत्तरदाता के रूप में समाविष्ट किया गया है। और यह अध्ययन डिसेंबर 2021 से मार्च 2022 इस कालावधी मे किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक आराखडे का प्रयोग किया गया है।

वर्तमान अध्ययन में, विदर्भ के 292 छोटे किसानों को गैर-संभाव्यता नमूनाकरण विधि का उपयोग करके सुविधा नमूनाकरण के माध्यम से शामिल किया गया था।

उत्तरदाताओं के पास कितनी कृषि है और क्या वे चाहते हैं कि लड़के और लड़कियों को शिक्षा मिले का सहसंबंध दर्शाने वाली द्विचल तालिका

अ.क्र.	कृषि कितनी है	क्यों लड़के और लड़कियां शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं					कुल
		समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए	सरकारी विभाग में नौकरी पाने के लिए	समाज के कल्याण के लिए	वित्तीय कमी को कम करने के लिए	खुद के विकास के लिए	
1	एक एकड़	14 (4.8%)	23 (7.9%)	14 (4.8%)	7 (2.7%)	2 (0.7%)	60 (20.5%)
2	दो एकड़	20 (6.8%)	16 (5.5%)	22 (7.5%)	24 (8.2%)	5 (1.7%)	87 (29.8%)
3	ढाई एकड़	31 (10.3%)	31 (10.3%)	47 (16.1%)	28 (9.6%)	8 (2.6%)	145 (49.7%)
	कुल	65 (22.3%)	70 (24.0%)	83 (28.4%)	59 (20.2%)	15 (5.1%)	292 (100%)

(Chi.Sq.=13.514, df=8, CC=0.210, N=292, P>0.05).

उपरोक्त तालिका में, स्वतंत्र चला से पता चलता है कि हमारे पास कितनी कृषि है और इसमें एक एकड़, दो एकड़ और ढाई एकड़ जैसी ३ विकल्प शामिल हैं। तो उन पर निर्भर चलमे इसमें उल्लेख किया गया है

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

कि आप क्यों चाहते हैं कि आपके बेटे और बेटियां शिक्षा प्राप्त करें इसमें समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने, सरकारी विभाग में नौकरी प्राप्त करने, समाज के कल्याण के लिए, आर्थिक कमजोरी को दूर करने के लिए और स्वयं के विकास के लिए ५ ऐसे विकल्प शामिल हैं।

एक एकड़ तक खेत रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 60 है और उनका अनुपात 20.5 प्रतिशत है। इसमें समाज में प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, ऐसा कहने वाले उत्तरदाताओं का अनुपात ४4.8 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि उन्हें सरकारी विभागों में नौकरी पाने के लिए अध्ययन करना चाहिए, 7.9 प्रतिशत है। और उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को समाज के कल्याण के लिए शिक्षा मिलनी चाहिए 4.8 प्रतिशत है। और उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को आर्थिक कमजोरी को दूर करने के लिए शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, 2.4 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को अपने विकास के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए, 0.7 प्रतिशत है।

जिन उत्तरदाताओं के पास दो एकड़ तक खेत है उनकी संख्या 87 है और उनका अनुपात 29.8 प्रतिशत है। इसमें समाज में प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, ऐसा कहने वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 6.8 प्रतिशत है। सरकारी विभागों में नौकरी पाने के लिए बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, ऐसा कहने वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 5.5 प्रतिशत है। और उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को समाज के कल्याण के लिए शिक्षा मिलनी चाहिए 7.5 प्रतिशत है। और उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को आर्थिक कमजोरी को दूर करने के लिए शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए 8.2 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को अपने विकास के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए 1.7 प्रतिशत है।

ढाई एकड़ खेत वाले उत्तरदाताओं की संख्या 145 है और उनका अनुपात 49.7 प्रतिशत है। इसमें समाज में प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, ऐसा कहने वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 10.6 प्रतिशत है। सरकारी विभागों में नौकरी पाने के लिए बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, ऐसा कहने वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 10.6 प्रतिशत है। और उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को समाज के कल्याण के लिए शिक्षा मिलनी चाहिए, 16.1 प्रतिशत है। और उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को आर्थिक कमजोरी को दूर करने के लिए शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, 9.6 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं का अनुपात जो कहते हैं कि बच्चों को अपने विकास के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए, 2.7 प्रतिशत है।

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से, यह स्पष्ट है कि ढाई एकड़ कृषि वाले उत्तरदाताओं का अनुपात सबसे अधिक 49.7 प्रतिशत है, इसके बाद दो एकड़ तक की कृषि वाले उत्तरदाताओं का 29.8 प्रतिशत और एक एकड़ तक की कृषि वाले उत्तरदाताओं का अनुपात 20.5 प्रतिशत है।

स्वतंत्र चल और आश्रित चल के बीच सहसंबंध देखने के लिए संख्यात्मक काईवर्ग की जांच की गई, काईवर्ग मूल्य 13.51 है और यह तालिका मुल्य से अधिक है। (Chi.Sq.=13.514, df=8, CC=0.210,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12 ,S Iss 1, 2023

N=292, P>0.05) इसका मतलब यह है कि इस अध्ययन में हम सबसे अधिक लघुकृषकों वाली ढाई एकड़ तक भूमि देख सकते हैं। लघुकृषकों में कृषि कम होने के कारण उनके परिवारों को उनकी आय का सहारा नहीं मिलता, इसलिए वे चाहते हैं कि उनके बच्चे समाज के कल्याण के लिए शिक्षा प्राप्त करें, सरकारी विभाग में नौकरी प्राप्त करें, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करें और आर्थिक कमजोरी को दूर करें।

छोटे किसानों का संगठन बनेगा तो बड़े पैमाने पर सामूहिक खेती होगी। कृषि की मात्रा कम होने के कारण उनके बेटे-बेटियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए अलग-अलग प्रकार की रियायतें देनी चाहिए ताकि बच्चों का बच्चा उसी आधार पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो। एक सुशिक्षित बच्चा नई तकनीकों का उपयोग करके क्षेत्र में बड़े पैमाने पर उत्पादन करेगा और उच्च शिक्षा प्राप्त करने से उन्हें समाज में बेहतर स्थिति और प्रतिष्ठा मिलेगी और नौकरी भी मिलेगी। छोटे किसानों के एक होने से उनकी संगठनात्मक शक्ति बढ़ेगी, इस संगठन का उपयोग बच्चों को शिक्षा देने में मदद करने के लिए किया जाएगा। छोटे किसानों का संगठनात्मक विकास छोटे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें सामाजिक दर्जा न मिल सके इसके लिए आवश्यक है।

सुचना व शिफारसी:

1. उत्तरदाताओं के पास कृषि का प्रमाण कम होने से उनके बच्चो को सरकारद्वारा अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिऐ ताकी वह रोजगार प्राप्त करके अपना अर्थिक विकास कर सके।
2. उत्तरदाताओं के बच्चो को अच्छी शिक्षा सरकारद्वारा मिली तो उसका फायदा कृषि मे उत्पादन बढाने मे होगा।
3. उत्तरदाताओ के शिक्षित बच्चो को सरकार द्वारा नयी तकनिक का उपयोग करने के लिऐ सहायता देनी चाहिऐ।
4. लघुकृषको के बच्चो को पहिली कक्षा से कृषी से संबंधीत शाला मे ज्ञान देना चाहिऐ।

संदर्भ:-

- कुसुम डे, मारुति, (28 जुलाई 2020) कृषी का वर्गीकरण: सम्राट डिजिटल;
- घरात, अमित, (7 जनवरी 2017) कृषी के उत्पादन का निम्नस्तर: ई-सकाळ
- सारंगपानी, श्रीनिवास, (9 नवंबर 2020) कृषी यह ग्रामिण अर्थव्यवस्थे का मुख्य आधार: महाराष्ट्र टाईम्स,
- महल्ले, विजय, (8 जुलाई 2017) कृषि शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता: महाराष्ट्र टाईम्स,